IBO IB DIPLOMA PROGRAMME
PROGRAMME DU DIPLÔME DU BI
PROGRAMA DEL DIPLOMA DEL BI

HINDI B – HIGHER LEVEL – PAPER 1
HINDI B – NIVEAU SUPÉRIEUR – ÉPREUVE 1
HINDU B – NIVEL SUPERIOR – PRUEBA 1

Thursday 8 May 2003 (afternoon)
Jeudi 8 mai 2003 (après-midi)
Jueves 8 de mayo de 2003 (tarde)

1 h 30 m

TEXT BOOKLET – INSTRUCTIONS TO CANDIDATES

- Do not open this booklet until instructed to do so.
- This booklet contains all of the texts required for Paper 1 (Text handling).
- Answer the questions in the Question and Answer Booklet provided.

LIVRET DE TEXTES – INSTRUCTIONS DESTINÉES AUX CANDIDATS

- Ne pas ouvrir ce livret avant d'y être autorisé.
- Ce livret contient tous les textes nécessaires à l'épreuve 1 (Lecture interactive).
- Répondre à toutes les questions dans le livret de questions et réponses.

CUADERNO DE TEXTOS – INSTRUCCIONES PARA LOS ALUMNOS

- No abra este cuaderno hasta que se lo autoricen.
- Este cuaderno contiene todos los textos requeridos para la Prueba 1 (Manejo y comprensión de textos).
- Conteste todas las preguntas en el cuaderno de preguntas y respuestas.

पाठांश "क": कॉलेज के बाद

कॉलेज की पढ़ाई पूरी हो जाने के पश्चात यह तय करना मुश्किल होता है कि आगे पढ़ाई की जाए या नौकरी । सही जानकारी द्वारा इस समस्या का हल ढूँढ़ा जा सकता है । ग्रेजुएशन के बाद तुम्हारा क्या करने का इरादा है, यह सवाल हर युवा से पूछा जाता है । यह ज़्यादा अच्छा होगा कि आप कॉलेज छोड़ने से पहले ही इस बारे में विचार कर लें कि किस प्रकार का काम आप करना चाहेंगे और किस स्तर की शिक्षा की आपको ज़रूरत होगी । बहुत से छात्र आगे पढ़ना सिर्फ़ इसलिए जारी रखते हैं कि वे फ़िलहाल जॉब तालाश करने के झंझट से बचना चाहते हैं।

अगर आप आगे पढ़ाई करने चाहते हैं तो इसके बारे में बहुत कुछ सोचने के लिए है । आज भारत में उच्च शिक्षा पद्धति चयन के इतने अवसर प्रदान करती है जितने पहले के समय में नहीं थे । वास्तव में, उच्च शिक्षा में पिछले कुछ वर्षों में इतनी विविधता और परिवर्तन आया है कि निर्णय लेना मुश्किल हो गया है । लेकिन दूसरी तरफ़ इससे आपके विकल्प भी बढ़ गए हैं । थोड़े-से सोच-विचार और रिसर्च के द्वारा आप अपने लिए सही कोर्स ढूँढ़ सकते हैं ।

यह जानना बहुत ज़रूरी है कि किस तरह के कोर्स उपलब्ध हैं और आपकी आवश्यकता के हिसाब से कौन-सा कोर्स उपयुक्त रहेगा । निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर देकर आपको सही विचार मिल सकता है :
मैं कितना पढ़ना चाहता हूँ ?
मैं थ्योरी या प्रैक्टिकल में से किस पर आधारित कोर्स करना चाहता हूँ ?
किस स्तर की शिक्षा में मुझे सुविधा महसूस होगी ?
कोर्स के लिए मैं बाहर जाने को कितना तैयार हूँ ?
मैं कहाँ पढ़ाई करूँगा?

पिछले - **उदाहरण** - वर्षों से प्राइवेट संस्थाओं - **६** - तादाद बहुत बढ़ी है । इन पर खर्चा - **७** - बहुत आता है लेकिन इनमें ऐसे अनगिनत क्षेत्र भी सम्मिलित होते हैं - **८** - विश्वविद्यालय में नहीं सिखाए जाते हैं । अपने आसपास देखें और अपने विकल्पों - **९** - सोचें । ध्यान रखें कि कोर्स वैधानिक रूप से मान्यता प्राप्त हो । अगर - **१०** - संशय हो या उचित जानकारी न हो तो इन तकनीकी, मैनेजमेंट - **११** - कंप्यूटर से संबंधित कोर्स - **१२** - दाखिला लेने से पहले इनकी प्रामाणिकता जाँच करने के लिए एआईसीटीई (ऑल इंडिया काँऊसिल फ़ॉर टेक्निकल एजुकेशन) - **१३** - संपर्क करें ।

पाठांश "ख"

इस तरह गुज़रा जन्मदिन

तीस साल पहले बाईस अगस्त को एक सज्जन सुबह मेरे घर आये । उनके हाथ में गुलदस्ता था । उन्होंने बड़े स्नेह और प्यार से मुझे गुलदस्ता दिया । मैं अकचका गया । मैंने पूछा - यह क्यों ? उन्होंने कहा - आज आपका जन्मदिन है न । मुझे याद आया मैं बाईस अगस्त को पैदा हुआ था । यह जन्मदिन का पहला गुलदस्ता था । वे बैठ गये । हम दोनों अटपटे थे । दोनों बेचैन थे । कुछ बातें होती रहीं । उनके लिए चाय आई । वे मिठाई की आशा करते होंगे । मेरी मेज़ पर फूल भी नहीं थे । वे समझ गये होंगे कि सवेरे से इसके पास कोई नहीं आया । इसे कोई नहीं पूछता । लगा होगा जैसे शादी की बधाई देने आये हैं, और इधर घर में रात को दहेज की चोरी हो गई हो । उन्होंने मुझे जन्मदिन के लायक नहीं समझा । तब से अभी तक उन्होंने मेरे जन्मदिन पर आने की गलती नहीं की । धिक्कारते होंगे कि कैसा निकम्मा लेखक है कि अधेड़ हो रहा है, मगर जन्मदिन मनवाने का इन्तज़ाम नहीं कर सका । इसका साहित्य अधिक दिन टिकेगा नहीं ।

चार-पाँच साल पहले मेरी रचनावली का प्रकाशन हुआ था । उस साल मेरे दो-तीन मित्रों ने अख़बारों में मेरे बारे में लेख छपवा दिये, जिनके ऊपर छपा था - २२ अगस्त जन्मदिन के सुअवसर पर । मेरी जन्म-तारीख़ २२ अगस्त १९२४ छपती है । यह भूल है । तारीख़ ठीक है । सन् ग़लत है । सही सन् १९२२ है । मुझे पता नहीं मैट्रिक के सर्टिफ़िकेट में क्या है । मेरे पिता ने स्कूल में मेरी उम्र दो साल कम लिखाई थी, इस कारण कि सरकारी नौकरी के लिए मैं जल्दी "ओव्हरएज" नहीं हो जाऊँ । इसका मतलब है कि झूठ की परम्परा मेरे कुल में है । पिता चाहते थे कि मैं "ओव्हरएज" नहीं हो जाऊँ । मैंने उनकी इच्छा पूरी की । मैं इस उम्र में भी दुनियादारी के मामले में "अण्डरएज" हूँ ।

लेख छपे तो मुझे बधाई देने मित्र और परिचित आये । मैंने सुबह मिठाई मँगा ली थी । मैंने भूल की । मिलनेवालों में चार-पाँच मिठाई का डिब्बा लाये । इतने में सब निबट गये । अगले साल मैंने सिर्फ़ तीन-चार के लिए मिठाई रखी । पाँचवें सज्जन मिठाई का बड़ा डिब्बा लेकर आये । फिर हर तीन-चार के बाद कोई मिठाई लिए आता । मिठाई बहुत बच गई । चाहता तो बेच देता और मुआवज़ा वसूल कर लेता । ऐसा नहीं किया । परिवार और पड़ोस के बच्चे दो-तीन दिन खाते रहे ।

इस साल जन्मदिन से पहले "वेद" लग गया । "वेद" के समय लोग कुछ नहीं खाते । मेरा खाना-पीना तो नहीं छूटा वेद की अवधि में पर आशंका रही कि इस साल क्या करनेवाले हैं यार लोग । प्रगतिशील लेखक संघ के संयोजक जयप्रकाश पाण्डे

आये और बोले - इक्कीस तारीख़ की शाम को एक आयोजन रखा है । उसमें आपके साहित्य पर भाषण है । मैंने कहा - नहीं नहीं कोई आयोजन मत करो! जयप्रकाश पाण्डे ने कहा - मैं आपकी मंज़ूरी नहीं ले रहा हूँ, आपको सूचित कर रहा हूँ। आपको रोकने का अधिकार नहीं है । आपने लिखा और उसे प्रकाशित करवा दिया । अब उस पर कोई भी बात कर सकता है । इसी तरह आपका जन्मदिन को कोई भी मना सकता है ।

पाठांश "ग"

पागल कौन होता है ?

व्यक्ति का व्यवहार और उसकी मानसिक कठिनाइयां इस तरह आपस में मिल जाती हैं कि वह औरों से अलग व्यवहार करने लगता है। लेकिन समाज की भी अपनी मान्यताएं होती हैं और कोई चीज एक संस्कृति में सामान्य और दूसरी में असामान्य कही जा सकती है। वास्तव में असामान्य कौन होता है ?

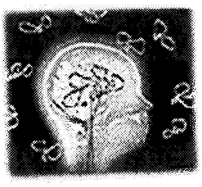

१ असामान्यता का शाब्दिक अर्थ है-सामान्य से अलग। मानसिक रूप से असामान्य व्यक्ति का कोई निश्चित मानदंड निर्धारित करना असंभव सा ही है। किंतु मनोवैज्ञानिक इसके लिए दो मुख्य आधार देते हैं। कुछ मनोवैज्ञानिकों के अनुसार यदि मनुष्य सामाजिक नियमों और आदर्शों का उल्लंघन करता है तो वह असामान्य कहा जा सकता है। जबकि कुछ विशेषज्ञों के ख्याल में असामान्य व्यक्ति मानसिक दृष्टि से बीमार तथा असंगठित होता है। इसमें अकारण चिंता तथा भय जैसे कई मानसिक लक्षण मिल सकते हैं। चूंकि हमारे पास सामान्यता का भी कोई आदर्श मॉडल नहीं है, इसलिए असामान्यता विषय दृष्टिकोण भी कई हैं। कतिपय विचारों के मुताबिक व्यक्ति में स्वयं के स्वीकार तथा स्व की पहचान बनाने की भावना है तो ही वह समाज में अपना उचित स्थान बना सकता है। व्यक्तिगत शील-गुण भी इसी संदर्भ में महत्वपूर्ण है।

२ शुरू के वक्त में असमान्यता को देवी अभिशाप या भूत-प्रेत बाधा मान लिया जाता था। अब असामान्यता पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण उपलब्ध है। मानसिक दृष्टि से असंगठित होना, असमान्यता का लक्षण है, यह पैथालॉजिक दृष्टिकोण है। सांस्कृतिक दृष्टिकोण से कहा जाए तो हरेक संस्कृति के अपने आचार-विचार होते हैं। यदि व्यक्ति इसका पालन करता है तो सामान्य कहलाएगा। किंतु जो बात एक समाज में स्वीकार्य है, वह दूसरे में निषिद्ध हो सकती है। अतः विभिन्न संस्कृतियों के लोग एक दूसरे की नजर में असामान्य हो जाएंगे और फिर संस्कृति भी तो परिवर्तनशील होती है। आज से कुछ समय बाद, आज के सामान्य को असामान्य भी माना जा सकता है। यह भी हमेशा जरूरी नहीं है कि व्यक्ति सिर्फ अपनी संस्कृति व समाज के अनुरूप चलकर ही अपना विकास करे। कई बार संस्कृति से चिपके रहने की बजाए उसमें आवश्यक बदलाव ज्यादा प्रासंगिक हो सकता है। तब सांस्कृतिक दृष्टि की धारणा असामान्यता व वर्गीकरण का सही आधार नहीं दे पाती।

३ व्यक्तिगत समायोजन एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। अतः जो व्यक्ति आंतरिक आवश्यकताओं तथा आसपास के वातावरण से प्रभावपूर्ण समायोजन रख सकता है, वह सामान्य कहा जाएगा और जो अपनी समस्याएं सुलझाने में अत्यधिक अनुपयुक्त व्यवहार प्रदर्शित करे उसे असामान्य करार दे दिया जाएगा। किन्तु समायोजन के साथ-साथ व्यक्ति को अपनी योग्यताओं के अनुरूप प्रगति करना भी आवश्यक है। यदि एक प्रतिभाशाली व्यक्ति केवल दैनिक कार्यों को ही सफलतापूर्वक करता है तो इस मत से ऐसा व्यक्ति हमारी दृष्टि से असामान्य होगा क्योंकि वह अपनी प्रतिभा का उपयोग न कर, सामान्य व्यवहार से ही वक्त खत्म कर देता है।

पाठांश "घ" : दिलचस्प कथा कॉमिक्स की

चित्रों के माध्यम से कथा कथन की परंपरा अति प्राचीन है । गुफ़ाओं में अंकित चित्रों में कई कथाएँ पुरातत्त्वविदों को मिल चुकी हैं । भित्ति चित्र कथाओं की परंपरा पूर्वी देशों में भले ही प्राचीन हो, पर मुद्रित चित्रकथाओं में अमेरिका और दूसरे देशों का बोलबाला रहा है । भारत में भी पश्चिमी चित्रकथाओं ने स्वदेशी को कभी पनपने का अवसर नहीं दिया । यह ज़रूर है कि कुछ भारतीय व्यावसायी विदेशी चित्रकथाओं के भारत में प्रकाशन व भारतीय भाषाओं में अनुवाद के अधिकार प्राप्त कर भारी मुनाफ़ा कमाने में कामयाब हो **- उदाहरण -** ।

विदेशों से आयातित चित्रकथाओं ने भारतीय बचपन को लुभाया । जब वाल्ट दिज़्नी के मिकी माउस और डोनाल्ड डक ने भारतीय धरती पर भारतीय भाषाएँ बोलते **- ४६ -** प्रवेश किया तब दूसरे सारे कॉमिक नायक लोकप्रियता की होड़ में पिछड़ गए । कुछ चित्रकथाओं में गोरा नायक आम काले नागरिकों से बेहतर है । मेनड्रेक का सहायक (या सेवक) अफ़्रीकी राजकुमार है, पर उसमें बुद्धि का अभाव है । टार्जन तो जंगल में पला **- ४७ -** अंग्रेज़ बच्चा है जो बड़ा होकर सभी क़बीलों का मार्गदर्शक बन जाता है । गोरी नस्ल को सर्वोत्तम साबित करने के साथ-साथ इन चित्रकथाओं में स्त्रियों को केवल भोग्या का दर्जा दिया गया है ।

भारतीय चित्रकथा के इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण मोड़ १९६७ में आया । टाइम्स ऑफ़ इंडिया में दो महीने की तालाबंदी के दौरान अनंत पै की मुलाक़ात इंडिया बुक हाउस के जीएल मीरचंदानी से **- ४८ -** । पै ने उन्हें चित्रकथाएँ निकालने का सुझाव दिया । पै का तर्क था कि अंग्रज़ी माध्यम के स्कूलों में पढ़नेवाले बच्चे भारतीय संस्कृति के नायकों और उनकी कथाओं से अपरिचित रहते हैं । मीरचंदानी को यह तर्क भा गया और उन्होंने अनंत पै को अपनी टीम बनाकर काम शुरू करने के लिए **- ४९ -** । पै को अब एक ऐसे चित्रकार की तलाश थी जो अपनी तूलिका से पौराणिक और ऐतिहासिक चरित्रों को आकर्षक और वास्तविक स्वरूप में प्रस्तुत कर **- ५० -** । इसके साथ ही परिवेश, वेशभूषा और कहानी के साथ ही पृष्ठभूमि को भी समय, काल, पात्र व स्थिति के अनुसार चित्रित कर सके ।

काम शरू हुआ, फ़रवरी १९६९ में । पहली विशुद्ध भारतीय चित्रकथा "कृष्ण" का प्रकाशन हुआ । इसके बाद "अमर चित्र कथा" शीर्षक से एक के बाद एक चित्र कथाएँ निकलने लगीं । पहले तो अमर चित्र कथा पाक्षिक पत्रिका के रूप में

निकलती थी । १९८८ में यह मासिक हो गई । अमर चित्र कथा ने अनंत पै को भारतीय कॉमिक्स के पितामह के रूप में प्रतिष्ठित कर दिया ।

भारतीय कॉमिक्स के इतिहास में एक दिलचस्प प्रसंग और आया । हिन्दी फ़िल्मों के महानायक अमिताभ बच्चन को चित्रकथा के रूप में प्रतिष्ठित करने का प्रयास हुआ । इंडिया बुक हाउस ने यह प्रयास **- ५१ -** । प्रसिद्ध फ़िल्म लेखक गुलजार द्वारा कहानियाँ लिखी गईं । लेकिन अमिताभ को बच्चों ने ठुकरा दिया । आज भी कई चित्रकथाएँ प्रकाशित हो रही हैं । प्रकाशक जानते हैं कि इसमें घाटा नहीं है क्योंकि चित्रकथाएँ कभी पुरानी नहीं पड़तीं ।

चित्रकथाएँ बच्चों को लुभाती हैं क्योंकि वे कम शब्द और अधिक चित्रों को पसंद करते हैं । लेकिन मनोवैज्ञानिक और शिक्षाविदों का कहना है कि ऐसा होने पर बच्चों की रुचि पढ़ने में बढ़ नहीं पाती । वे रामायण और महाभारत जैसे ग्रंथ भी चित्र कथाओं के माध्यम से पढ़कर संतुष्ट हो जाते हैं । वे किताबों को संपूर्ण, धाराप्रवाह रूप में पढ़कर साहित्य का आनंद नहीं ले पाते । बहरहाल, ये सभी तर्क अपनी जगह ठीक हैं पर बच्चों का दिल तर्कों को नहीं मानता । वे मनोरंजन चाहते हैं जो उन्हें इन चित्रकथाओं में मिलता है ।